

**विह्वल संपत-२०३६, श्रावण १६-१०, गुरुवार, ता. ४-९-१९८०**  
**वचनामृत-३५५, ३५७. प्रवचन नं. २४**

वचनामृत-३५५. अंतमें. 'निस्पृह ऐसा हो जा कि...' अंतर स्वरूप प्राप्त करनेके लिये निस्पृह ऐसा हो जाना 'कि मुझे अपना अस्तित्व ही चाहिए,...' मेरा अस्तित्व जो आत्मा पूर्ण आनंद आदि अस्तित्वस्वरूप, वह एक ही मुझे चाहिए, दूसरी कोई चीज नहीं चाहिए. आह्लाहा..! ऐसी लगनी लगे. 'अपना आत्माकी ही लगन लगे...' अपना निज स्वरूप शुद्ध चैतन्य स्वभाव उसकी त्रिकावी लयाती, वही मुझे चाहिए. आह्लाहा..! ऐसी भावनामें 'और अंतरमेंसे उत्थान हो...' अंतरमें आत्माकी लगन हो और अंतरमें पुरुषार्थ हो. लगन और पुरुषार्थमें उत्थान हो 'तो परिणति पलटे बिना न रहे.' तो परिणति-पर्याय पर-ओरके लक्ष्यसे जो पलटती है, वह स्व-ओर पलटे बिना रहे नहीं. आह्लाहा..! शब्द तो थोड़े हैं, भाव (गहन है).

निस्पृह तो ऐसा हो जाना चाहिए कि मुझे मेरा अस्तित्व (चाहिये). मेरी लयाती जो है त्रिकावी वस्तु, उसके सिवा मुझे कुछ नहीं चाहिए. ऐसी निस्पृह दशा हो और अंतरमें लगन लगे और अंतरमें पुरुषार्थ जुके तो परिणति अर्थात् पर्याय पलटे बिना रहे नहीं. आह्लाहा..! ऐसी चीज है. वह कोई बाहरकी क्रिया या आचरणसे प्राप्त हो, ऐसी यह चीज नहीं है. बाह्य आचरण और बाह्य क्रिया लाभ, कोड करे.. आह्लाहा..! लाभ बातकी बात.. आता है छल ढालमें? 'निश्चय उर आणो, छोडी जगत द्वंद्व इंद्र, निज आतम ध्यावो.' भगवान अनंत आनंद और अनंत ज्ञानस्वरूप (है), जिसका स्वभाव अनंत-अनंत आनंद, ज्ञानादि अनंत गुणका पिंड है वह. उसकी लगनी लगे तो परिणति पलटे बिना रहे नहीं. परिणति पर सन्मुख जो है, वह परिणति स्वसन्मुख हो जाये. आह्लाहा..! भाषा बहुत थोड़ी है, भाव (गहन है). वह उपप (पूरा हुआ).

**मुनिराजका निवास चैतन्यदेशमें है. उपयोग तीक्ष्ण होकर गहरे-गहरे चैतन्यकी गुझमें यला जाता है. बाहर आने पर मुहँ जैसी होती है. शरीरके प्रति राग छूट गया है. शांतिका सागर उमडा है. चैतन्यकी पर्यायकी विविध तरंगे उछल रही हैं. ज्ञानमें कुशल हैं, दर्शनमें प्रजल**

**हैं, समाधिके वेदक हैं. अंतरमं तृप्त-तृप्त हैं. मुनिराज मानों वीतरागताकी मूर्ति हों इस प्रकार परिणामित हो गये हैं. देहमें वीतरागदशा छा गई है. जिन नहीं परंतु जिनसरीजे हैं. ३५६.**

३५६. अब मुनिराजकी बात आयी. 'मुनिराजका निवास चैतन्यदेशमें है.' शरीर, वाणीमें तो नहीं, परंतु पुण्य और पापमें, शुभाशुभमें भी, मुनिराजका वास-निवास नहीं है. आलाला..! 'मुनिराजका निवास चैतन्यदेशमें है.' जहां राग और द्वेष है नहीं. और अकेला चैतन्य अनंत-अनंत गुणका स्वऽपऽप निज देश. आलाला..! निज देश-चैतन्यदेशमें है. 'उपयोग तीक्ष्ण होकर...' ज्ञानने-देखनेका उपयोग सूक्ष्म और तीक्ष्ण होकर 'गहरे-गहरे चैतन्यकी गुफामें खला जाता है.' आलाला..! गहरी-गहरी गुफा अर्थात् ध्रुव. आलाला..! अपना जो ध्रुव स्वभाव, उस ओर वर्तमानकी पर्याय, उसके सन्मुख अंदर जाती है. आलाला..! फिर भी वह पर्याय और ध्रुव अके नहीं हो जाते. आलाला..! ऐसी बात है.

'उपयोग तीक्ष्ण...' ज्ञानने-देखनेकी सूक्ष्मता ऐसी होनी चाहिये कि 'गहरे-गहरे चैतन्यकी गुफामें खला जाता है.' गहराईमें ध्रुवकी ओर ही मुनिराजकी दशा चैतन्यदेशकी ओर ही ढल गयी है. आलाला..! पुण्यका भाव, दया, दान, व्रत, महाव्रत परिणाम आता है, परंतु वृत्ति चैतन्यदेशमें बलती है. राग-ओर वृत्ति नहीं है, ज्ञाननेवायक है. रागादि आता है, उसका अस्तित्व है, ऐसा ज्ञाने. परंतु निवास तो अंदर चैतन्यगुफामें है. आलाला..! यह बात ऐसी सूक्ष्म है.

'बाहर आने पर...' अंतर चैतन्यस्वभाव ज्ञायकभाव जगृत स्वभाव, जो अपनेमें जगृतपना कायम स्वभावी है. जगृतपना है वही आत्मा है. रागादि, द्वेषादि कोई आत्मा नहीं. आलाला..! जो अपनेमें परको ज्ञानता है, ऐसा कटना, वह भी व्यवहार है. परको ज्ञाननेमें अपनी पर्यायको ही ज्ञानता है. ऐसी चैतन्यशक्तिकी गहरी गुफा... आलाला..! मुनि उसमें खले जाते हैं. उसमें दृष्टि खली जाती है. बारंबार मुनिराजकी परिणति अंतरकी ओरके जुकावमें ढलती है. आलाला..! 'बाहर आने पर मुर्दे जैसी दशा होती है.' अके ओर चैतन्यदेश, अके ओर मुर्दा. आलाला..! भाषा बहुत सादी है. परंतु... अके ओर चैतन्यदेश प्रभु, उसकी जिसकी अंतर परिणति पलटी, परिणति अर्थात् जिसकी अवस्था पलटी, उसको चैतन्यदेश स्व और पुण्य-पाप आदि बाहर है. बाहर आता है तो मुर्दे जैसा है. उसमें उत्साह नहीं है. राग

और पुण्य-पापका भाव आता है, कोई बार आर्तध्यान भी हो जाता है, मुनिको रौद्रध्यान नहीं है. रौद्रध्यान पंचम गुणस्थान तक (है). यहां कलते हैं, मुट्टे जैसी दशा हो जाती है. आलाला..!

जैसे मृतक क्लेवर हो, वैसे चैतन्यदेशकी अपेक्षासे चैतन्यदेश और स्वभावसे विपरीत भावमें पुण्य और पापभाव, पुण्यभाव विशेष है, उसमें भी मुट्टे जैसी दशा है. आलाला..! 'शरीरके प्रति राग (अेकता) छूट गया है.' शरीरके प्रति राग अर्थात् अेकता छूट गयी है. थोडा अस्थिरताका राग रहा है, फिर भी उस रागका राग नहीं होता. रागका राग नहीं होता. चैतन्यके प्रेमके आगे.. आलाला..! अनाकुल आनंदकंड प्रभु चैतन्य, उसके अंदर लगनीके प्रेमके कारण रागमें आते हैं, परंतु मुट्टे जैसा दिभे. आलाला..! जगृति स्वभावकी अपेक्षासे अजगृतमें आते हैं तो जैसे मुट्टा आया जैसे आते हैं. आलाला..! यह मुनिकी दिशा.

'शांतिका सागर उमडा है.' मुनिराज किसको कलें! आलाला..! तीन कषायका जलं अभाव (हो गया है), उतनी तो शांतिका सागर उमडा-उछवा है. शांतिका सागर उछवा है. आलाला..! शांति.. शांति.. शांति. एतनी शांति की शांतिका सागर उछवा है. आलाला..! क्योकि कषाय तो संज्वलन जितना अल्प है. संज्वलन-जरा-थोडा. बाकी तो शांति है. आलाला..! 'चैतन्यकी पर्यायकी विविध तरंगे उछव रही हैं.' चैतन्यकी पर्याय ज्ञानकी. अरे..! ज्ञान और आनंद, वीर्य आदि चैतन्यकी जे पर्याय है निर्भल, विविध तरंगे उछव रही है. अनेक प्रकारके तरंगके उछावे युक्त परिणति रही है. भाषा थोडी सादी है, भाव बहुत गहरे हैं. आलाला..! 'तरंगे उछव रही हैं.'

'ज्ञानमें कुशल हैं,...' में ज्ञानस्वरूप हूं, और एसके सिवा दूसरी चीजको भी ज्ञानते हैं, परंतु ज्ञानमें कुशल हैं. रागादि व्यवहार आता है मुनिको, परंतु रागमें कुशल हैं, ज्ञाननेवाले हैं. आलाला..! 'ज्ञानमें कुशल हैं, दर्शनमें प्रबल हैं,...' दर्शनउपयोग हो तो भी प्रबलता है. समकित-दृष्टि तो द्रव्य पर है. आलाला..! 'समाधिके वेदक हैं.' शांति. लोगस्समें आता है, श्वेतांबरमें. समाहिवर मुत्तं हित्तु. लोगस्समें. श्वेतांबरमें लोगस्स आता है, उसमें. समाधि अर्थात् आत्माकी ओरकी जुकावकी शांति. रागादि है वह असमाधि-अशांति है. आलाला..! अपनी 'समाधिके वेदक हैं.' समाधिका वेदनेवाला है. साथमें ज्ञान आ गया है. समाधिमें ज्ञानादि अनंत गुण (आ गये).

रातको प्रश्न हुआ था न? ज्ञान भी साथमें वेदता है. क्योकि अनंत गुणमें

अेक अतीन्द्रिय आनंदका रूप है. अनंत गुणकी संख्यामें अतीन्द्रिय अेक आनंद नामका गुण है. तो सबमें आनंद है. ज्ञान आनंद, दर्शन आनंद, चारित्र आनंद, शांति आनंद, स्वच्छता आनंद, कर्तृत्व आनंद, भोक्तृत्व आनंद, उन सब गुणोंमें आनंद (है). क्योंकि अेक-अेक गुणमें अनंत गुणका रूप है. आलाला..! रूपका अर्थ, जैसे ज्ञान है और अस्तित्व नामका गुण भी अंदर है. तो अस्तित्व गुण भिन्न है और ज्ञानगुण भिन्न है. फिर भी ज्ञान है, है, ऐसा अस्तित्वका रूप भी ज्ञानगुणमें है. अस्तित्व गुणके कारणसे नहीं. अपने स्वरूपमें है. जैसे प्रत्येक गुण है. अस्तित्व गुण उसमें होने पर भी अपने प्रत्येक गुणमें है ऐसा स्वरूप और रूप भी अपनेसे है. आलाला..! क्या कला समझे?

आत्मामें अस्तित्व नामका गुण है. सत् सत्. और ज्ञानगुण है, आनंदगुण है. तो प्रत्येकमें अस्तित्वका रूप है. अस्तित्व गुण भिन्न (है). अेक गुण दूसरे गुणमें ज्ञाता नहीं. परंतु दूसरे गुणमें उसका अस्तित्वका रूप अर्थात् ज्ञान है, आनंद है, वीर्य है, ऐसा अपने कारणसे अस्तित्वका है पना है. अस्तित्व गुणके कारणसे उसका अस्तित्व है नहीं. आलाला..! ऐसी सूक्ष्म बात.

कहते हैं, 'समाधिके वेदक हैं.' मुनिराज तो आनंदके वेदक हैं. शांतिके वेदक हैं. राग आता है, वेदक भी हैं थोड़े, परंतु उसकी मुज्यता न कलकर, समाधिके ही वेदक हैं. समाधि अर्थात् शांति. आधि, व्याधि, उपाधि रहित समाधि. आधि-कल्पना, विकल्प. व्याधि-शरीर. आधि, व्याधि, उपाधि-बाहरका संयोग. उपाधि-बाह्य संयोग. व्याधि-शरीरमें रोग. आधि-कल्पना, पुण्य-पापकी कल्पना. आधि, व्याधि, उपाधिसे रहित समाधि. आलाला..! जिसमें उपाधि संयोगही तो नहीं है, परंतु जिसमें शरीरकी व्याधि-रोगादि नहीं है. परंतु जिसमें कल्पना पुण्य-पापकी कल्पना जो आधि है, वह भी समाधिमें नहीं है. आलाला..! ऐसी समाधिका वेदन है.

'अंतरमें तृप्त-तृप्त हैं.' अनंत-अनंत गुणका पिंड प्रभु, उसके आश्रयसे अनंत गुणकी अेक समयमें व्यक्त पर्याय अनंत गुणकी प्रगट लुयी, और वह भी तीन कषायके अभावसे सब प्रगट लुयी, उससे तृप्त-तृप्त हैं. आलाला..! जैसे लूजा मनुष्य आहार-पानी अनुकूल मिले तो तृप्त-तृप्त लगता है. वह तो बाहरकी जडकी बात है. यह अंतरकी जुराक. आत्माका अंदर जुराक. आलाला..! शांति, आनंद, स्वच्छता, ज्ञान, दर्शन, आनंद आदि अंतरका जुराक है. उस जुराकमें.. आलाला..! वेदक हैं, तृप्त-तृप्त हैं. आलाला..! दुनियासे पूरी अलग बात है.

'मुनिराज मानों वीतरागताकी मूर्ति हों...' आलाला..! वह तो वीतरागस्वरूप

ही आत्मा है. त्रिकाव वीतरागस्वरूप आत्मा है. ऐसी पर्यायमें वीतरागता आ गयी. आलाहा..! जैसी वीतरागकी शक्ति और स्वभाव है, वैसी पर्यायमें भी वीतरागता आ गयी. वीतरागकी मूर्ति हैं. आलाहा..! राग और द्वेषका कण-अंश बिना अकेला वीतरागमूर्ति आत्मा है. आलाहा..! मुनिराजका. नीचे पंचम गुणस्थान आदिमें तो दो कषाय है. अकेमें अतृप्ति और उतना दुःख है. चौथे गुणस्थानमें भी तीन कषायका सहभाव है. उतना वल वेदन और दुःख है. परंतु उससे रहित जितना हुआ उतना ज्ञान और आनंदका वेदन है. मुनिको तो तीन कषाय रहित हुआ. आलाहा..! शांतिका सागर जो आत्मा, पूर्ण वीतरागतामें तो प्रगट हो जाता है, परंतु मुनिराजको शांतिका सागर उमड जाता है. आलाहा..! शांतिमें समाधि.. समाधि, आनंद.. आनंद.. आनंद.. आनंद. तृप्त-तृप्त रहते हैं. आलाहा..! **‘मानों वीतरागताकी मूर्ति हों..’** जाने. मानों अर्थात् जाने कि वे तो वीतरागकी ही मूर्ति है. भगवान आत्मा वीतरागस्वरूप है, ऐसी पर्यायमें वीतरागता आ गयी है.

नियमसारमें तो पञ्चप्रभमवधारीदेव कहते हैं कि मुनिराजमें और वीतरागमें इर्क माने, वल जड हैं, ऐसा कहते हैं. पञ्चप्रभमवधारीदेव नियमसारमें दो श्लोक है. उसमें अक श्लोक तो ऐसा है कि भगवानमें और मुनिराजमें थोडा रागका अंतर है. अक श्लोक ऐसा है. बादमें दूसरा श्लोक लिया कि वीतरागमें और मुनिमें इर्क माने, हम जड हैं. हम जड हैं, ऐसी भाषा ली है. आलाहा..! साधु. आलाहा..! वीतरागमें और मुनिराजमें कोई इर्क माने वल जड है. आलाहा..! उसे चैतन्यकी जगृति अंदर तीन कषायके अभावकी हो गयी. जगमगाती ज्योति चैतन्यपर्यायमें शक्तिरूप तो थी त्रिकावमें सबमें, परंतु वल तो पर्यायमें जगमगाती ज्योति (प्रगट लुयी). अनंत अनंत गुणकी अनंती व्यक्ति प्रगट दशा जहां लुयी, आलाहा..! वहां वल तृप्त-तृप्त मानों वीतरागकी मूर्ति है. आलाहा..!

**‘ईस प्रकार परिणामित हो गये हैं.’** साक्षात् मानो वीतरागकी मूर्ति हो. ईस प्रकार परिणामित, पर्यायमें परिणामन, अवस्था ही उस रूप हो गयी है. जैसा वीतराग स्वभाव त्रिकाव है, वैसी पर्यायमें वीतराग परिणामित हो गयी है. आलाहा..! उसे मुनि कहें. आलाहा..! **‘देहमें वीतराग दशा छा गई है.’** आलाहा..! देहमें भी.. **‘उपशमरस वरसे रे प्रभु तारा नयनमां..’** वैसे पूरी देहमें उपशमरस-शांतरस (छा गया है). भक्तामर स्तोत्र तो ऐसा कहते हैं कि जितना शांत परमाणु हैं, परमाणु, वल सब प्रभुके शरीरमें आकर परिणामित हो गये हैं. जितने परमाणुमें.. उसकी शांति अर्थात् जडकी, हां! आलाहा..! वल सब परमाणु परमात्मा तीर्थकरके शरीरमें

आकर (बस गये हैं). शरीर उपशमरसका पिंड हो, आत्मा तो उपशमरसका पिंड है ही, परंतु शरीर उपशमरसका पिंड है, ऐसा देखते हैं. आलाहा..! शरीरमें भी थोड़ी भी चपलता या विकृति नहीं है. आलाहा..! ऐसी दशा वीतरागकी है, वैसी मुनिकी हो गयी है, ऐसा कहते हैं. 'ईस प्रकार परिष्कृत हो गये हैं.' आलाहा..!

'देहमें वीतरागदशा छा गઈ है.' देहमें वीतरागदशा छा गई. दिभे, ऐसा दिभे. देह तो जड है. शांत.. शांत.. शांत. वीतराग स्वभाव जहां पूर्ण प्रगट हुआ, तो देहमें भी मानो शांतिकी छाया दिभे. शांत.. शांत.. शांत. आलाहा..! देभो! यह मुनिकी परिभाषा! 'देहमें वीतरागदशा छा गई है. जिन नहीं...' भले वे जिन नहीं हैं, 'परंतु जिनसरीभे हैं.' आया न पहले? मुनिराजने.. वीतराग और मुनिमें थोडा-सा भी झंझ नहीं मानना. यह. 'जिनसरिभे हैं.' जिनसरिभे जिन हैं. आलाहा..! जिनसरिभे जिन हैं. जिन भले नहीं हैं, परंतु जिनसरिभे जिन ही हैं. आलाहा..! अकेला वीतरागभाव. विकल्पकी कल्पनाकी जहां शांति हो गयी है. अकेला चैतन्यमूर्ति भगवान अपनी पर्यायमें वीतरागताइय परिष्कृत हो गया है और अकेली वीतरागकी छाया, देहमें भी मानो वीतरागकी छाया दिभे. ऐसी दशा प्रगट हुई है. आलाहा..! ऐसी मुनिकी परिभाषा है.

इसको लोअे सव्व सालूणं. ऐसे. आलाहा..! उप६ (पूरा) हुआ न?

ईस संसारमें जव अकेला जन्मता है, अकेला मरता है, अकेला परिभ्रमण करता है, अकेला मुक्त होता है. उसे किसीका साथ नहीं है. मात्र भांतिसे वह दूसरेकी ओट और आश्रय मानता है. ईस प्रकार यौद्ध ब्रह्मांडमें अकेले भटकते हुअे जवने ईतने मरण किये हैं कि उसके मरणके दुःखमें उसकी माताकी आंजोंसे जो आंसु बहे उनसे समुद्र भर जायें. भवपरिवर्तन करते-करते बडी मुश्किलसे तुजे यह मनुष्यभव प्राप्त हुआ है, ऐसा उत्तम योग मिला है, उसमें आत्माका हित कर लेने जैसा है, जिजलीकी चमकमें मोती पिये लेने जैसा है. यह मनुष्यभव और उत्तम संयोग जिजलीकी चमककी भांति अल्प कालमें पिलीन हो जायेंगे. ईसलिये जैसे तू अकेला ही दुःखी हो रहा है, जैसे अकेला ही सुखके मार्ग पर जा, अकेला ही मुक्तिको प्राप्त कर ले.

उप७.

उप७. उप७ लिया है. 'ईस संसारमें जव अकेला जन्मता है,...' कोई संग नहीं. यह बात अकेत्व समतिमें आ गई है. आत्मा आत्माके कारण वहां जाता

है, कर्म कर्मके कारण साथमें जाते हैं और कर्मके निमित्तसे, निमित्तके वश, उससे नहीं, विकार भी विकार अपने कारणसे जाता है. यह आ गया है. आलाहा..! आत्मा आत्माके कारणसे जाता है, कर्म कर्मके कारण जाते हैं और विकार भी विकारके कारण जाता है. तीनों भिन्न-भिन्न रहते हैं. आलाहा..! निश्चयकी बात परम सत्य रुभी लगे और अकांत जैसी लगे. इसमें मानो कोई व्यवहार नहीं आया. व्यवहारकी बात क्या करनी? व्यवहार तो पूरा व्यवहार है. विकल्पसे लेकर समस्त लोकालोक व्यवहार है. एक भगवान आत्मा वीतरागमूर्तिकी दृष्टि, ज्ञान, अनुभव और स्थिरता (दुयी), उसमें भी मुनिकी स्थिरता.. आलाहा..! उसके सिवा विकल्पसे लेकर पूरा संसार व्यवहार है. पूरा लोकालोक व्यवहार है. निश्चयमें एक अपना आत्मा. व्यवहारमें विकल्पसे लेकर पूरा लोक. आलाहा..!

यहां कहते हैं, 'ईस संसारमें जोव अकेला जन्मता है,...' अकेला है. भले कर्म कर्मके कारण, विकार विकारके कारण (होता है). कोई संग अंदरमें एक हुआ है, ऐसा है नहीं. आलाहा..! 'ईस संसारमें जोव अकेला जन्मता है, अकेला भरता है,...' आलाहा..! देह छोडकर अकेला चला जाता है. पैसा, बडा मकान पांच-पांच कोडका बनाया हो, ठाठमाठ.. आलाहा..! अकेला जाता है. अकेला आया और अकेला जाता है. कोई दूसरी चीज उसकी उसमें है नहीं. दूसरे कर्म भले जाय, परंतु वह तो भिन्न है. आलाहा..! 'अकेला भरता है,...' कर्मके कारणसे नहीं. अपनी योग्यता इतनी (है). निश्चयसे तो ऐसा है, आत्मा भिन्न चीज है. टोको तो स्पर्श भी नहीं है. एक द्रव्य दूसरे द्रव्यको छूता ही नहीं. आलाहा..!

भगवान आत्मा आयुष्यसे यहां रहा है ऐसा कहना वह तो निमित्तसे कथन है. बाकी आयुष्यके परमाणुको तो भगवान छूते भी नहीं. और वह परमाणु आत्माको छूता नहीं. परंतु अपनी लायकातसे शरीरमें रहता है. आयुष्यके कारण रहता है ऐसा कहना वह निमित्तका कथन है. आलाहा..! समझमें आया? अपनी योग्यता उतनी है, उस अनुसार रहता है. कर्म तो निमित्त परवस्तु है. उसके कारणसे आत्मा रहता है और वह कर्म भवास होता है तो चला जाता है, वह सब व्यवहारका कथन है.

ईसलिये यहां कहा, 'अकेला भरता है,...' आयुष्य पूरा हुआ ईसलिये देह छूट गया, (ऐसा नहीं है). उतनी योग्यता अनुसार यहां अकेला रहा. आलाहा..! ईस देहमें, अपनी योग्यता-लायकातकी पर्याय, जितने काव अपनी यहां रहनेकी योग्यता है उतना काव रहता है. योग्यता पूरी दुयी तो देह छोडकर चला जाता

है. आयुष्य पूरा हुआ तो यवा गया, जैसा कलना वल व्यवहारसे कथन है. अक द्रव्य दूसरे द्रव्यको कभी छूता नहीं. आलाला..! अक पदार्थ दूसरे पदार्थको, अरे..! दूसरे पदार्थको-जडको तो मालूम भी नहीं है कि मैं कर्म हूं. आयुष्यको मालूम है कि मैं आयुष्य हूं? भगवान आत्माको मालूम है कि मेरी योज्यता अनुसार मैं यहां रहता हूं और योज्यता पूर्ण हो गयी तो यहांसे निकल जायेगा. आलाला..! निमित्तके कथन शास्त्रमें गोम्मटसारमें तो जैसा आये कि ज्ञानावरणीयसे ज्ञान रुका. आयुष्यके कारण शरीरमें रहता है. आलाला..! अंतराय कर्मके कारण अंतराय पडती है. आलाला..! वल सब निमित्तका कथन है. बहुत संक्षेपसे जैसा कलना कि अपनी पर्यायिकी योज्यतासे वल है.. निमित्तसे होता नहीं, धतना वंभा नहीं कलकर... जैसा कल दिया है.

बाकी तो प्रत्येक द्रव्य प्रतिसमय अपनी पर्यायिकी स्वतंत्रतासे काम करता है. दूसरा द्रव्य छूता नहीं. आलाला..! अक शरीर दूसरे शरीरको छूता नहीं. शरीरको आत्मा छूता नहीं. आलाला..! और शरीर आत्माको छूता नहीं. प्रत्येक अपने-अपने अस्तित्वमें (रहते हैं).

यहां वल कहते हैं, 'अकेला जन्मता है, अकेला मरता है, अकेला परिभ्रमण करता है,...' कर्म-भर्मके कारण नहीं. अकेला परिभ्रमण करता है. अपनी योज्यतासे परिभ्रमण करता है. कर्म परद्रव्य है, जड है. पर तो निमित्त है. निमित्तको तो आत्मा छूता भी नहीं. आलाला..! बहुत कठिन बात. 'अकेला परिभ्रमण करता है, अकेला मुक्त होता है.' मुक्त होता है तो अकेला. आलाला..! अपनी पर्यायिकी योज्यतासे (मुक्त होता है). आठ कर्मका नाश हुआ तो मुक्त हुआ, जैसा नहीं है. आलाला..! क्योंकि आत्मा कभी कर्मको छुआ ही नहीं. आत्मा उसको स्पर्शा भी नहीं, स्पर्श किया नहीं. और आत्माने कर्ममें प्रवेश किया नहीं और कर्मने आत्मामें प्रवेश नहीं किया. आलाला..! जहां आत्मा है उसी क्षेत्रमें कर्म हैं. फिर भी दोनोंका क्षेत्र भिन्न है. आत्मामें वल प्रवेश करके रहा है, जैसा नहीं. आलाला..! जैसी बात वीतरागके सिवा (कहीं नहीं है). स्वरूप ही जैसा है.

'अकेला परिभ्रमण करता है, अकेला मुक्त होता है.' मुक्ति भी अकेलेकी होती है. कर्म टलते हैं तो मुक्त होता है, जैसा भी नहीं. आलाला..! अपनी पर्यायमें अपूर्णताकी योज्यता थी तो मुक्ति नहीं होता था. .. तो मुक्त होता है. वल तो अपने कारणसे है. कोई कर्मके कारणसे यहां रहा है और कर्म गये तो मुक्ति होती है, जैसा है नहीं. आलाला..! गजब बात है. 'उसे किसीका साथ नहीं है.' अक तत्त्वको दूसरे तत्त्वका साथ नहीं है. सहारा नहीं है. आलाला..! अक तत्त्वके साथ



दूसरे तत्त्वका साथ, साथमें यह आया तो ईसे आना पडा, कर्म यहांसे हटते हैं तो आत्माको यहांसे हटना पडा, जैसा है नहीं. आलाहा..! 'उसे..' भगवान आत्माको 'किसीका साथ नहीं है.' आलाहा..! देव-गुरु-शास्त्रका साथ नहीं है, गजब बात करते हैं. वह सब तो व्यवहारका कथन है.

'मात्र भ्रान्तिसे वह दूसरेकी ओट...' आश्रय. 'ओर और आश्रय मानता है.' मात्र भ्रान्तिसे वह दूसरेकी ओट.. आलाहा..! और उसका आश्रय (मानता है). मुझे उसकी अनुकूलता है, सेठकी, दुकानकी, ... तो मुझे ठीक है. वह मान्यता भ्रान्ति है, कहते हैं. मैं पैसेवावा हूं, मैं निरोगी हूं, मैं पुत्रवान हूं, मैं शालुकार हूं, मैं सेठ हूं, आलाहा..! सब भ्रान्ति है. वह खीज भिन्न और तेरी खीज भिन्न. तेरी खीज और उस खीजके बीचमें तो अनंत-अनंत अभाव है. आलाहा..! तो कहते हैं, 'मात्र भ्रान्तिसे वह दूसरेकी ओट और आश्रय मानता है. ईस प्रकार चौदह ब्रह्मांडमें...' आलाहा..! ईस प्रकार चौदह राजूवोकमें 'अकेले भटकते लुअे...' आलाहा..! 'ईस प्रकार चौदह ब्रह्मांडमें अकेले भटकते लुअे जवने ईतने मरणा किये हैं...' मनुष्यकी बात करते हैं. बाकी अकेन्द्रिय, दो ईन्द्रियके मरणा किये अनंत. यहां तो मनुष्यपने ईतने मरणा किये.. आलाहा..! ईस प्रकार जवने 'ईतने मरणा किये हैं कि उसके मरणाके दुःखमें...' उसके मरणाके दुःखमें 'उसकी माताकी आंभोंसे...' मनुष्यपना लिया है. बाकी तो जन्म-मरणा तो प्रत्येक (गतिमें किये हैं). अकेन्द्रिय, दो ईन्द्रिय, तीन ईन्द्रियमें अनंत बार हुआ. परंतु यहां मरणाके दुःखमें, यहां पंचेन्द्रिय, उसकी माताकी आंभोंमें जो आंसू बहे.. आलाहा..! 'उनसे समुद्र भर जायें.'

अष्टपालुडमें कुंदकुंदाचार्यका पाठ है. कुंदकुंदाचार्यका पाठ है, प्रभु! तूने मनुष्य भव ईतने धारणा किये और उतनी बार तू द्रव्यलिंग धारणा करके मर गया. द्रव्यलिंग तो धारणा किया, परंतु बादमें दूसरे भव किये. उतने भव किये कि तेरे मरने पर तेरी माताके आंसूसे दरिया भर जाये, उतनी बार तू मरा है. तेरी माताके आंसू निकले, जैसी-जैसी अनंती माता. आलाहा..! यह तो पंचेन्द्रियकी बात है, मनुष्यपनेकी बात है. अकेन्द्रिय, दो ईन्द्रिय, तीन ईन्द्रिय, निगोह वह अवग. यहां पंचेन्द्रिय मनुष्यकी ...

'उसके मरणाके दुःखमें उसकी माताकी आंभोंसे जो आंसू बहे उनसे समुद्र भर जायें.' आलाहा..! भूतकालमें ईतने मरणा किये, प्रभु अनादिसे सत्ता तेरी तो है. अनादिअनंत तेरी सत्ता है. तो तेरी सत्ता कहां रही? परिभ्रमणमें रहा. परिभ्रमणमें तेरा देह छूटनेके कालमें, मनुष्यपनेमें, तेरी माताकी आंभोंसे आंसू बहे. आलाहा..!

બહુત સાલ પહલે એક માં દેખી થી. ઉસકે પુત્રકો પૈરમેં ક્ષય હુઆ થા. એડી હોતી હૈ ન? પૈરકી એડી. યહ ભાગ. ઘૂંટી કહતે હૈં. વહાં ક્ષય હુઆ થા. પ્રત્યક્ષ દેખા થા. વહાં ક્ષય હુઆ થા. દામોદર સેઠ વહાં થે. મુખ્ય મનુષ્ય થા. ઉસકે લડકેકા લડકા થા. યહાં હડીમેં ક્ષય હુઆ થા. યહ હડી હૈ ન? વહાં ક્ષય હુઆ થા. સડ ગયા થા. દેખા થા. આહા..! ફિર લડકા મર ગયા. હમ અપાસરેમેં થે. વહાંસે મુદ્દા નિકલા. પીછે ઉસકી માં ... પૂરા શરીર.. આહાહા..! અરે..! ઈસમેં.. આહાહા..! પુત્ર કૌન ઔર માં કૌન? અકેલે રહના, અકેલે જાના, અકેલે દુઃખ સહન કરના ઔર અકેલે મોક્ષકા આનંદ કરના. આહાહા..! હમ અપાસરામેં બૈઠે થે. લડકેકા મુદ્દા નિકલા. ઉસકી માં પીછે ગિરી. બજારકે બીચ ... ખડી હોકર ગિરે, આહાહા..! ભાન નહીં. જો ગયા વહ આયે કબ? જો હો ગયા, સો હો ગયા. આહાહા..! યહ તો પ્રત્યક્ષ દેખા થા.

વહાં કહતે હૈં, 'ઉસકી માતાકી આંખોંસે જો આંસૂ બહે ઉનસે સમુદ્ર ભર જાયેં. ભવપરિવર્તન કરતે-કરતે બડી મુશ્કિલસે તુજે યહ મનુષ્યભવ પ્રાપ્ત હુઆ હૈ,....' આહાહા..! ક્યા કહતે હૈં? ભવપરિવર્તન કરતે-કરતે અકેલા મનુષ્ય (ભવ) નહીં. ભવ પરિવર્તન કરતે-કરતે એકેન્દ્રિય, દો ઈન્દ્રિય, ત્રીન ઈન્દ્રિય, ચૌ ઈન્દ્રિય, પંચેન્દ્રિય, નારકી, દેવ, મનુષ્ય, પશુ આદિ. આહાહા..! 'બડી મુશ્કિલસે તુજે યહ મનુષ્યભવ પ્રાપ્ત હુઆ હૈ,....' અનંત કાલકે બાદ બડી મુશ્કિલસે (પ્રાપ્ત હુઆ હૈ). ....